"निदान"

- मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा । गुरमुखि बूझहि रोग गवावहि गुर सबदी वीचारा ।1।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य सदा मेर - तेर के रोग में फंसा रहता है, मन का मुरीद सारा जगत ही इस रोग का शिकार हुआ रहता है । पर गुरु के सन्मुख रहने वाले मनुष्य सही जीवन - जुगति को समझ लेते हैं, गुरु के शब्द की इनायत से विचार करके वह यह रोग अपने अंदर से दूर कर लेते हैं ।

• मनमुख मूल गवावहि लाभ मागहि लाहा लाभ किद होई । जमकाल सदा है सिर ऊपर दूजै भाइ पत खोई ।2।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य अपनी संपत्ति ही गवा लेते हैं, पर माँगते हैं आत्मिक लाभ । बताओ, उनको कैसे कमाई हो सकती है ? लाभ कहाँ से मिले ? आत्मिक मौत सदा उनके सर पर सवार रहती है । माया के प्यार में फंस के उन्होंने लोक - परलोक की इज्जत गवा ली होती है ।

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे त्रिसना जलहि अधिकाई । मरि मरि जंमहि ठउर न पावहि बिरथा जनम गवाई ।1।

अर्थः- हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य भेदभाव के आत्मिक रोग में जकड़े हुए हैं, माया के लालच की आग में बहुत जलते हैं इस तरह ही अपना कीमती जनम व्यर्थ गवा के पैदा होने मरने के चक्करों में पड़े रहते हैं, इस चक्कर में से उनको मुक्ति नहीं मिली ।

मेरे प्रीतम करि किरपा देह बुझाई । हउमै रोगी जगत उपाइआ बिन सबदै रोग न जाई ।1।रहाउ।

अर्थः- हे मेरे प्रीतम प्रभु ! मेरे पर मेहर कर, मुझे आत्मिक जीवन की सूझ बख्श । हे प्रभु ! अहंकार ने सारे जगत को आत्मिक तौर पर रोगी बना रखा है । यह रोग गुरु के शब्द के बिना दूर नहीं हो सकता ।

सिम्रिति सासत्र पड़हि मुन केते बिन सबदै सुरति न पाई । त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई।2।

अर्थः- हे भाई ! अनेक मुनि जन स्मृतियाँ पढ़ते हैं शास्त्र भी पढ़ते हैं, पर गुरु के शब्द के बिना आत्मिक जीवन की सूझ किसी को प्राप्त नहीं होती । सारे ही त्रै - गुणी जीव अहंकार के रोग में फंसे पड़े हैं, ममता ने उनकी होश भुला रखी है ।

इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए । हरि का नाम निधानो पाइआ सुख वसिआ मनि आए ।3।

अर्थः- पर, हे भाई ! कई ऐसे भाग्यशाली हैं जिन्हें प्रभु ने स्वयं ही ममता में से बचा रखा है, प्रभु ने उनको गुरु की सेवा में लगा रखा है । उन्होंने परमात्मा का नाम खजाना पा लिया है, इस वास्ते उनके मन में आत्मिक आनंद आ बसा है ।

चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निज घरि वासा पाइआ । पूरै सतिगुर किरपा कीनी विचहु आप गवाईआ ।4।

अर्थः- हे भाई ! गुरु के सन्मुख रहने वाले मनुष्य तीनों गुणों के प्रभाव से ऊपर के आत्मिक मण्डल में रह के जगत से कार - व्यवहार बनाए रखते हैं । वह सदा प्रभु - चरणों में टिके रहते हैं । पूरे गुरु ने उन पर मेहर की हुई है, इस वास्ते उन्होंने अपने अंदर से स्वै भाव दूर कर लिया है ।

एकस की सिर कार एक जिन ब्रहमा बिसन रुद्र उपाइआ । नानक निहचल साचा एको ना ओहुमरै न जाइआ ।5।

(3-1130-1131)

अर्थः- पर, हे भाई ! जीवों के भी क्या वश ? जिस परमात्मा ने ब्रहमा विष्णू शिव जैसे बड़े - बड़े देवता पैदा किए, उसका ही हुक्म हरेक जीव के ऊपर चल रहा है । हे नानक ! सदा कायम रहने वाला सदा अटल रहने वाला एक परमात्मा ही है, वह ना कभी मरता है ना पैदा होता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"